Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

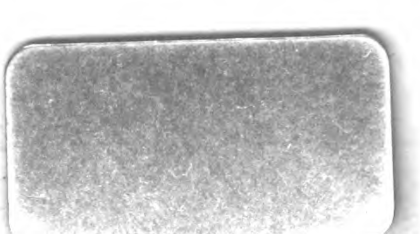

पर संगम का बड़ा नहान होता है यहां सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी की दरगाह बहुत मशहूर है हर साल जेठ के अव्वल हफ़्ते में एक मरतबा अक्सर बड़े २ मक़ामों से हिंदू और मुसल्मान और पेशेवाले झंडे निशान लेले कर आते हैं पहले यहां पर हिन्दुओं का सूर्य्यकुंड था लोहे के बर्त्तन अच्छे और मज़बूत बनते हैं नमदे यहां के बहुत मशहूर हैं बरसोला गट्टे यहां एक ख़ास क़िस्म की मिठाई होती है—नानपारा बहरायच से १२ कोस पर सरयू नदी के क़रीब है इस से नज़दीक एक बड़ा जंगल है अक्सर नैपाल गंज से कत्था, सोंठ, लालमिरच, कस्तूरी के नाभे किराना वग़ैरह आता है अनाज और कपड़ा बहुत बिकता है बैल वग़ैरह यहां के बहुत अच्छे होते हैं भंग और गांजा वग़ैरह उत्तर का बहुत नशीला होता है मैना वग़ैरह भोटिये बहुत लाते हैं आबादी ६८६६ है इन के सिवाय जरवल, फ़ख़रपूर, हिसामपूर, बौंड़ी, अकौना, भिनगा पयागपूर, शिवपूर बड़े २ मौज़े हैं जरवल, फ़ख़रपूर, हिसामपूर में घेघों की ख़ास बीमारी है और बहुत कम बाशिंदे होंगे कि जिन के गले में घेघा न हो अवध में बौंड़ी ख़ास रहने का मक़ाम महाराजा कपूरथला का है अकौना के पान और पौंड़े मशहूर हैं धान बहुत होते हैं ॥

शुभंभवतु समाप्तोयंग्रन्थः ॥

इति ॥

पर संगम का बड़ा नहान होता है यहां सैयद सालार मसऊद ग़ाज़ी की दरगाह बहुत मशहूर है हर साल जेठ के अव्वल हफ़्ते में एक मरतबा अक्सर बड़े २ मक़ामों से हिंदू और मुसल्मान और पेशेवाले झंडे निशान लेले कर आते हैं पहले यहां पर हिन्दुओं का सूर्य्यकुंड था लोहे के बर्त्तन अच्छे और मज़बूत बनते हैं नमदे यहां के बहुत मशहूर हैं बरसोला गट्टे यहां एक ख़ास क़िस्म की मिठाई होती है—नानपारा बहरायच से १२ कोस पर सरयू नदी के क़रीब है इस से नज़दीक एक बड़ा जंगल है अक्सर नैपाल गंज से कत्था, सोंठ, लालमिरच, कस्तूरी के नाफे किराना वग़ैरह आता है अनाज और कपड़ा बहुत बिकता है बैल वग़ैरह यहां के बहुत अच्छे होते हैं भंग और गांजा वग़ैरह उत्तर का बहुत नशीला होता है मैना वग़ैरह भोटिये बहुत लाते हैं आबादी ६८६६ है इन के सिवाय जरवल, फ़ख़रपूर, हिसामपूर, बौंडी, अकौना, भिनगा पयागपूर, शिवपूर बड़े २ मौज़े हैं जरवल, फ़ख़रपूर, हिसामपूर में घेघों की ख़ास बीमारी है और बहुत कम बाशिंदे होंगे कि जिन के गले में घेघा न हो अवध में बौंडी ख़ास रहने का मक़ाम महाराजा कपूरथला का है अकौना के पान और पौंड़े मशहूर हैं धान बहुत होते हैं ॥

शुभंभवतु समाप्तोयंग्रन्थः ॥

इति ॥

हवा ख़ास कर उत्तर की अच्छी नहीं है दक्षिण का पानी ख़राब है सरसरी बन्दोबस्त की मालगुज़ारी क़रीब साढ़ेछः लाख के है बाज़ जगह ज़मीन चाय की खेती के लायक़ है बारहबंकी के बाद ज़ियादह मुसल्मान इस ज़िला में हैं और ख़ास कर काश्तकार मुसल्मान सब जगह से ज़ियादह हैं तहसीलें यहां सिर्फ़ तीन हैं बहरायच की तहसील बीच में है उस के उत्तर नानपारा की तहसील और दक्षिण कोंड़ासर का इलाका है तहसीली मक़ामों के सिवाय ससई, पयागपुर, अकोना, भिनगा, मोतीपुर में एक एक थाना है अंगरेज़ी बड़ा मदर्सा ख़ास बहरायच में है सिवाय इस के बोंड़ी, अकोना में महाराजा कपूर थला की तर्फ़ से एक मदर्सा है अस्पताल ख़ास बहरायच और हिसामपुर में है ॥

बयालीसवां पाठ ।

ऐज़न् ॥

क़स्बे पंचहज़ारी इस ज़िला के सिर्फ़ दो याने बहरायच ख़ास और नानपारा हैं अवध की कुल आबादियों में बहरायच तीसरे नम्बर पर है ॥

सिवाय लखनऊ और फ़ैज़ाबाद के और कहीं यहां से ज़ियादह आबादी नहीं इस का पुराना होना भी इस की पुरानी तारीख़ों से अच्छी तरह साबित होता है दो हज़ार तीनसौ बरस उधर यहां का हाल एक चीनी सैर करने वाले ने अपनी किताब में लिखा है इस के नीचे छोटी सरयू करनैलगंज के पास घाघरा में मिलती है और वहां

हैं फूल के बर्तन यहां बहुत ढाले जाते हैं और बाहर रवाना होते हैं जड़हन चावल भी यहाँ का मशहूर है ताड़ के पंखे और बेत के पिटारे यहां के सैागात मेंसे हैं आबादी १२ कम छ: हज़ार है ठठेरे और बनिये ख़ास कर रहते हैं करनैलगंज भी गोंडा में बड़ा गंज है तराई वग़ैरह से चावल यहां बहुत आता है सन और टाट की पट्टियां लखनऊ और बहरायच को बहुत जाती हैं एक मील दक्षिण सरयू नदी है आबादी ५८६८ है बनिये और भरभूंजे बहुत हैं सिवाय इन मक़ामों के मनकापूर, तुलसीपूर, मछली बाज़ार भी बड़े मक़ाम हैं मनका पूर में महुआ बहुत अच्छा होता है तुलसी पूरके पश्चिम देवी पाटन का मेला बड़ा भारी होता है अक्सर पहाड़ी लोग घोड़े, टट्टू, टांगन, मुश्क, नाफ़े, गरम मसाले और चिड़ियां वग़ैरह बहुत लाते हैं मछली बाज़ार में ग़ल्ला की ख़रीद फ़रोख्त बहुत होती है ॥

इकतालीसवां पाठ।

ज़िला बहरायच ॥

पारके दो ज़िलों में बहरायच दूसरा ज़िलाहै उत्तर इसके सल्तनत नेपाल दक्षिण नवाब गंजपूर्ब गोंडा पश्चिम ज़िला खीरी है रशिया नदी उत्तरीय हिस्से में पश्चिम से पूर्ब जाकर राबती में मिलती है टेढ़ी नदी इसी ज़िला से निकल कर घाघरा में गिरती है पश्चिम हट्टूपर बबई नदी घाघरा में मिलती है ख़ास बहरायच के नीचे छोटी सरयू है रक़बा कुल ज़िला का २०१० मुरब्बा मील है आब व

पश्चिमीय देशों में जाती थी बेत के पिटारे भी यहां के मशहूर हैं टेढ़ी नदी इसके क़रीब है इस नदीके गिर्द के टट्टू बहुत मज़बूत और तेज़ होते हैं आबादी ३५ कम बारह हज़ार है ॥

बलरामपुर को अवध का एक ख़ास रजवाड़ा तसव्वर करना चाहिये यह महाराजा बलराम पुर का ख़ास रहने का मक़ाम है राबती का एक नाला इस के इधर उधर बहता है थोड़े फ़ासिले पर ख़ुद राबती है यह से क़रीब पहाड़ के नीचे लोहा मिलता है बाज़ार बहुत बड़ा लगता है और गरम मसाला, कत्था, तांबा वग़ैरह का व्योपार पहाड़ियों से बहुत होता है चावल भंग गांजा नशे की चीजें हरतरफ़ जाती हैं शेर और जंगली सुवर का शिकार बहुत होता है महाराजा साहब की तरफ़ से अकसर अजीब व ग़रीब जानवर तमाशे जानने के लिये पिंजरों में बंद हैं अवध के बेरून जातमें महाराजा की कोठी एक बहुत उमदह इमारत है आबादी यहां पौने दोसौ कम १४ हज़ार है ॥

नवाबगंज आबाद कियाहुआ शुजाउद्दौलाका टेढ़ी नदी पर है और अनाज यहां लखूखा रुपये का बिकता है और घाघरा नदी के राह बाहर मुल्कों में भेजाजाता है शोरा और नमक बहुत बनाया जाता है मछली का शिकार बहुत होता है बनिये क़ौम कसौंधन यहां बहुत हैं आबादी छः हज़ार सवासौ की है ॥

उतरौला ख़ास मुसल्मानी क़सबा है सैयद अकसर बस्ते

जाता है वह सब और चांवल सब ज़िलों से यहां ज़ियादा पैदा होता है ज़िला हरदोई के बाद गेहूं की पैदावारी इस ज़िला में बहुत है गाड़ी और छकड़े इस ज़िलामें सब जगह से ज़ियादह हैं नावें फ़ैज़ाबाद के बाद इस ज़िला में बहुत हैं क़ौमों में से थारू, चाई, भोटिये और भर यहां अक्सर पाये जाते हैं इस ज़िला में चार तहसीलें हैं पश्चिम में ख़ास गोंडा उत्तर में बलरामपूर की तहसील दक्षिण में बेगमगंज की तहसील पूर्व में चौथी तहसील तरहराक वाक़े है—सिवाय तहसीली मक़ामों के करनैल गञ्ज वज़ीरगंज, उतरौला, पंचपेड़वा, लालिया, विशंभरपूरमें एक एक थानाहै—अंगरेज़ी बड़ा मदरसा ख़ास गोंडा में है सिवायइसके बलरामपूर में भी अंगरेज़ी पढ़ाई जातीहै जो किइस ज़िला में बहुत सा इलाक़ा महाराजा सर दिगबिजयसिंह बहादुरके० सी० ऐस० आई मालिक बलरामपुर व तुलसीपुर वग़ैरहके क़बज़े इख़तियार में है इसवास्ते उनकी फ़ैयाज़ी और रि-याया परवरी से अलावा मक़ाम बलरामपूरके अक्सर जगह छोटेछोटे मदर्से मुक़र्रर हैं—गोंडा, करनैलगञ्ज, बलरामपूर और उतरौला में एक एक शिफ़ा ख़ाना भी है ॥

चालीसवां पाठ।

क़स्बे ॥

ख़ास गोंडा ज़िला का सदर मक़ाम क़दीम क़स्बा है घसियारे और मेवाती वग़ैरह ज़ियादा रहते हैं लटेरा और फूल दो क़िस्म के चावल यहां बहुत उमदा होते हैं बा-दशाहीमें यहां ढाल बहुत उमदा बनती थी और तमाम

नक्रपुर, जलालपुर दो बराबर क़स्बे हैं पेश्तर जुलाहे यहां बहुत थे देशी बिलायती सूतका कपड़ा बिना जाता है और कानपूर वग़ैरा दूरदूर रवाना होता है आबादी छ: हज़ारपौने तीन सौ है ॥

सिंझोली की आबादी पांचहज़ार छ:सौ है ॥

सिवाय इन पंच हज़ारी क़स्बों के दोस्तपुर, भरतीपुर भदरसा, कछौछा, अकबरपुर बड़े बड़े मक़ाम हैं इनकी तारीख़ें पुराने ज़माने से ताल्लुक़ रखती हैं ॥

इत्तिफ़ातगंज टांडेके पास बड़ा गंज है फूलके बर्त्तन यहां बनते और बिकते हैं ॥

शाहगंज महाराजा मानसिंह के रहने का मक़ामहै ॥

उन्तालीसवां पाठ ।

ज़िला गोंडा ॥

ज़िला गोंडा के उत्तर तर्फ़ सल्तनत नेपाल व दक्षिण में घाघरा पूर्बमें गोरखपूर और पश्चिम में ज़िला बहरायच है हिमालय पहाड़ यहां से दिखाई देता है सबसे बड़ा दरिया राबती नेपाल के पहाड़ोंसे निकल कर उत्तर उत्तर गोंडे के होकर पूर्ब तर्फ़ घाघरा में मिलताहै बूढ़ा राबती इसके उत्तर सबसे छोटी २ नदियों से मिलकर उसी द-रियाय राबती में आमिलती है और नदी नालेइस ज़िलअ में बहुत हैं रक़बा क़रीब २६२६ मुरब्बा मील के है आब व हवा तराई के क़रीब होने के वजह से अच्छी नहींहै मालगुज़ारी इस कुल ज़िला की बमोजिब बंदोबस्त सरसरी के क़रीब दशलाख के है जिसर अनाजका तेल निकाला

वग़ैरह नदीके रास्ते नावों पर बहुत आता है आबादी ३७१०४ है क़ौम बरवार कि बड़े मशहूर चोर होते हैं ख़ास कर इस ज़िला में पाये जाते हैं ॥

अड़तीसवां पाठ।

ऐज़न्॥

टांडा दूसरे दर्जे का क़स्बा सरयू किनारे बहुत पुराना है जुलाहे और बनजारे यहां बहुत रहते हैं सल्लम और मारकीन पर छींट छपकर क़रीब लाख रुपये के साल में बाहर जाती है जामदानी, सोज़नी, मालदही और गुल-दाऊदी यहांकी बहुत मशहूर और अच्छी होतीहै जुलाहे यहां के ख़ास बाशिंदे हैं आबादी १३५४३है अयोध्या निहायत पुरानी बस्ती है और इसकी जांच फ़ारसी किताबों से भी बराबर होती है राजा रामचन्द्र जी यहीं ज़ाहिर हुए थे हिंदुओं का बयान है कि रामचन्द्र जी के बाद अयोध्या डूबगई और अब जो मक़ामात मौजूद हैं वह सब बिक्रमादित्य ने बनवाये गंगापुत्र और बैरागी ख़ास कर बसते हैं बर्त्तन यहां के क़ाबिल सौदागरी के हैं राम नौमी का बहुत बड़ा मेला होता है और हिन्दूका ख़ास पूजा करनेका मक़ाम तमाम हिंदुस्तान मेंहै हनुमानगढ़ी यहां की ख़ास कर मशहूर है मगर सिवाय इसके और बहुत बड़े२ पुराने मन्दिर और घाट वग़ैरा मौजूद हैं पेश्तर यहां बड़े बड़े आलिम फ़ाज़िल होगये हैं अब भी दो एक बे मिस्ल मौजूद हैं झींगा मछली का शिकार ख़ास कर यहां होता है आबादी ८८५० है ॥

सैंतीसवां पाठ।

ऐज़न॥

क़स्बे इस ज़िला के फ़ैज़ाबाद ख़ास, टांडा, अयोध्या जलालपूर, सम्भौली हैं॥

लखनऊ के बाद अवध में घाघराके किनारे फ़ैज़ाबाद शहर है अवधका असल सदर मक़ाम यही था मन्सूरअलीख़ां सफ़दर जंग ने इसे आबाद और तामीर करायाथा और बंगलेके नामसे मशहूर था अमलदारी नेशा पुरी की बढ़ती यहांसे शुरू हुई थी सब क़िस्मके लोग अमीर ग़रीब नवाब वग़ैरह अब भी रहते हैं पुराना मक़ाम तिरपौलिया मौजूद है नवाब शुजाउद्दौला जो अवध में बड़े बहादुर नवाब होगये हैं उनकी क़बर यहीं गुलाब बाड़ी में है उनकी बड़ी मशहूर बीबी बहू बेगम साहिबा की क़बर भी शहरके दक्षिण तरफ़ है इसके सिवाय महल्ले गंज वग़ैरह सब लखनऊ के मवाफ़िक़ उन्हीं नामोंपर हैं चौक बिसाता महाजन: सब मौजूद हैं सबसे बड़ा गंज साहब गंज है अंगरेज़ी में छावनी, अस्पताल, मदरसा और मकानात कचहरी वग़ैरह अच्छे अच्छे बन गये हैं सब क़िस्मकी चीज़ें मिलती हैं देव काली का मन्दिर बहुत क़रीब है लकड़ी के क़लम दान और संदूक़चे यहां बहुत अच्छे बनते हैं मेवोंमें शरीफ़ा कौला और छोटा केला बहुत उमदा होता है तरकारियोंमें बंडे यहांके मशहूर हैं किरानेका यहां बड़ा दिसावर है महदावल जो बड़ी मंडी ज़िला गोरखपूर में है वहांसे कत्था, लालमिरच और सोंठ

पूर्व आज़मगढ़ पश्चिम बारहबंकी सबसे बड़ा दरिया घाघरा है उसी की एक धारको अयोध्याके पास सरयू कहते हैं टोंसनदी पूर्व से पश्चिम आज़मगढ़ को जाती है और इसकी धारा उत्तर व दक्षिण नालों के तौर पर है सिवाय इसके मजूई नाला बड़ा नाला है ज़िला के बीच में कई झीलें हैं रक़बः एक हज़ार नौ सौ अस्सी मुरब्बा मील है मालगुज़ारी तेरा लाख २९ हज़ार दोसौ के क़रीब है गन्ना सब जगहसे ज़ियादह पैदा होता है और तम्बाकू सनई और क़िस्म क़िस्मके अनाज कई ज़िलों से यहां ज़ियादह पैदा होते हैं इस ज़िलामें नावें सब जगहसे ज़ियादह हैं और जानवरोंमें सूवर बहुत हैं जैनमत के लोग इस ज़िला में भी हैं बैरागी किसी ज़िला में इतने नहीं हैं तहसीलें चार हैं फ़ैज़ाबादमें गोशह उत्तर पश्चिम बीकापुरमें गोशह दक्षिण पश्चिम है अकबरपूर में पूर्व दक्षिणका गोशह और टांडा में उत्तर और पूर्व का हिस्सा शामिल है तहसीली मक़ामों के सिवाय रौनाही, मिलकीपूर, जलालपूर, मया में एक एक थाना है अवध का सब से बड़ा सरकारी मदर्सा सदरमें है इमारत इसकी अच्छी है और अंगरेज़ी फ़ारसी संस्कृत वग़ैरह पढ़ाई जाती है लखनऊके बाद अवध का बड़ा सदर मक़ाम यहां है एक अस्पताल भी मुक़र्रर है इमारत इसकी राजा बिष्णुप्रकाश सिंह साहब बैकुंठबासी तालुक़ेदार तिरहुत ने अपने सर्फ़से बनवाई थी ॥

संग्रामगढ़ और बूबूपुर सब सात थाने हैं अंगरेज़ी मदरसा कलां ख़ास परतापगढ़ में है बाक़ी तहसीलोंमें एक २ उर्दू व फ़ारसी मदरसा है ॥

पैंतिसवां पाठ ।

ऐज़न् ॥

मरदुम शुमारी से कुल ज़िला में सिवाय ख़ास बेल्हाके पांच हज़ार से ज़ियादह आबादी कहीं नहीं है पुरानी बस्ती परतापगढ़ है और अब उससे चार मीलके फ़ासिले पर बमक़ाम बेल्हा कुल ज़िला का सदर है परतापगढ़ राजा परताबसिंह का बसाया हुआ है आदमी यहांके बहुत परेशान हैं बेर और मिसरी यहांकी अच्छी होती है तम्बाकू कसरत से होता है परताबगढ़ के बाद मानिकपूर, बिहार व पट्टी है मानिकपूर में बड़ी २ लड़ाइयां मुसल्मानों और क़ौम भर वग़ैरह से हुई हैं और इस क़सबे के हाल बहुत बड़े हैं ॥

बिहार की सफ़ेद चीनी ख़ास कर मशहूर है इलाहाबाद वग़ैरह बहुत जाती है ॥

पट्टी में मक्रेकी बहुत खेती होती है सदर मक़ाम बेल्हा से १५ मीलपर है इसके आसपास में नमक का ब्योपार बहुत होता है ज़िला की ख़ास बाज़ारें लालगंज, मकन्दरागंज, कालाकांकर, बाबूगंज, मेदनीगंज, डबरा, गढ़वारा हैं ॥

छत्तीसवां पाठ ।

ज़िला फ़ैज़ाबाद ॥

ज़िला फ़ैज़ाबाद उत्तर इसके घाघरा दक्षिण सुल्तांपुर

होतेहैं— दोस्त पुर अकबर बादशाह के रिसालदार दोस्त महम्मदखां का बसायाहै बंगाले से आगरे के रास्ते में पेश्तर यह जगह पड़ती थी जगदीश पुर के महाजन बहुत मशहूरहैं सेथी मुसल्मानी क़स्बा है और गढ़ अमेठी में राजा साहबके रहनेकी वजहसे बड़ी रौनक़है गौरीगंज और मुकुलकी बाज़ारें होतीहैं—यहां हज़ारहा रुपयेका ब्योपारहोताहै॥

चौंतीसवां पाठ।

ज़िला परतापगढ़ ॥

परतापगढ़ ज़िला के उत्तर सुलतांपुर दक्षिण गङ्गाजी और उस तरफ़ इलाहाबाद पूर्व जौनपुर और पश्चिम मेंभी गङ्गाजी पड़तीहैं—ज़िला के अंदर से सई नदी गुज़रती है सिवाय इसके लोनी है छोटी छोटी नदी नाले बहुत हैं मगर कोई मशहूर नहीं—झीलेंभी छोटी२ कई हैं रक़बा १४४४ मील मुरब्बाहै—उत्तर और पश्चिम बहुत ज़ियादा क़ाबिल ज़रायत है कुल माल गुज़ारी ६८५०५४ है यहां की ज़मीन में नील धान और गन्ना बहुत अच्छा पैदा होताहै नील इस क़दर किसी ज़िला में नहीं है शक्कर का बड़ा ब्योपार होता है भेड़ बकरी इस ज़िला में सब जगह से ज़ियादह हैं नमक और शोरा ज़मीनसे बहुत निकलताहै—आबादी ८८२४८१ है मुसल्मानी कायथ यहां बहुत हैं और एक ख़ास फ़िरक़ा कुरैशीकाखाने बदोश रहताहै यह लोग चोरीके लिये मशहूरहैं यह ज़िला अक्सर नवाबीसे ख़राब और तबाह है ॥

तहसीलें तीन हैं परतापगढ़ शिमाल में पट्टी पूर्व में बिहार पश्चिम में तहसीलों के सिवाय रानीगंज,जिठवारा

गढ़ पूर्बमें आज़म गढ़ और जौन पुर पश्चिम में रायबरेली है गोमती नदी इसमें इसके उत्तर उत्तर बहती है कांदू का नाला जिसकी बाबत (दक्षिण की कमाई कांदू नालेमें गवांई) यह बहुत मशहूर मसल है वह यहीं लखनऊ के रास्ते में पड़ताहै—पेश्तर यहां बड़ी लूट मारहोती थी कुल रक़बा १२७३ मील मुरब्बाहै और माल गुज़ारी ८६८२८४—आब व हवा अच्छी है कपास चावल की ख़ास पैदावारहै टट्टू इस ज़िलामें सब जगह से ज़ियादःहैं—तहसीलें चार हैं उत्तर पूर्बमें कादीपुर पश्चिम में मुसाफ़िर ख़ाना पूर्बमें सुल्तांपुर औरपश्चिम दक्षिणमें रायपुर है-तहसीली मक़ामोंके सिवाय जगदीशपुर, लमभुवा भरती पुर में एक एक थाना पुलिस है सदर सुल्तांपुर में अंगरेज़ी मदर्साहै और बाक़ी तहसीलों में छोटेउर्दू नागरी के मदर्से हैं, सदर में एक अस्पताल है ॥

तेंतीसवां पाठ।

ऐज़न ॥

पांच हज़ार की आबादी के क़स्बे इसमें बहुत कमहैं ख़ास सुल्तां पूरमें सिर्फ़ ५७७८ आबादी है ग़दर के बाद लोगों की बग़ावत और नमक हरामी की सज़ामें पुराना सुल्तांपूर खुदवा डाला गया अब जो आबादीहै वह ग़दर केबादकीहै—इसके बाद—चांदा, हसनपुर, बंधुआ, दोस्तपुर जगदीशपुर, सेथी, गढ़ अमेठी यह मक़ाम कुछ कुछ क़स्बों के मवाफ़िक़है—चांदा के बाज़ार में गुड़ हज़ारों मन बिकता है ॥

हसन पुर बंधुआ एक दूसरे से मील भरके फ़ासिले परहै यहां फूलके बर्त्तन बहुत उमदा बनतेहैं और दूर दूर रवाना

इकतीसवां पाठ।

ऐज़न॥

खास क़सबे इस ज़िलाके जायस, राय बरेली, कुंसा, डलमऊ सलोन, अख़तियारपुरहैं॥

जायस बड़ी पुरानी मशहूर बस्तीहै यहां बड़े आलिम व फ़ाज़िल मुसल्मान होगये हैं मलिक महम्मद जिनकी बनाई भाषा पदमावत है वह यहींके थे—धोतर महमूदी और डोरिया यहां का मशहूरहै—जुलाहे अकसर बड़े कारीगर हैं उमदह उमदह बेल बूटे और इबारतोंकी इबारतें कपड़े पर बुनदेतेहैं—आबादी ११६८९ है खास बरेलीके तीन हिस्से बरेली क़िला और जहानाबादहैं यहांएक पुराना कुवां बड़ा मशहूरहै—बरेली के बरे तारीफ़ी होतहैं आबादी ८०६२ है॥

कुन्सा की आबादी ५८६४ है॥

डलमऊ भी बड़ापुराना मकामहै—गङ्गाजीके किनारेपर हिन्दुओंकी यहां यात्राकी बड़ी जगह है कार्तिक की पूर्णमासी को बड़ा मेला होताहै—जौनपूर के बादशाहों ने इसपर बड़े हमले कियेहैं नमक और शोरा बहुत बनताहै आबादी ५६५४ की है सलोन ऊंचे पर आबादहै—आबादी ५१६० है चावल यहां के मशहूर हैं एक अरबी और फ़ारसी मदर्से और खानक़ाह के वास्ते जागीर चली आती है॥

बत्तीसवां पाठ।

ज़िला सुलतांपुर॥

सुल्तांपूर के उत्तर गोमती नदी दक्षिण में परताप

तीसवां पाठ ।

ज़िला रायबरेली ॥

ज़िला रायबरेली का सदर मक़ाम लखनऊ से दक्षिण तरफ़ पच्चीस कोस है उत्तर में इसके बारहबंकी और लखनऊ है दक्षिण में गंगाजी पूर्व में ज़िला परतापगढ़ और सुलतांपुर पश्चिममें गंगाजी और ज़िला उन्नाव है सई और लोनी दो बड़ी नदियां ज़िला के अन्दर हैं इनके सिवाय दन्दोली, मखना ख़ास नाले हैं बसहाकी झील इस ज़िला में भी शामिल है कुल रक़बा ज़िला का १६१२ मुरब्बा मील है और मालगुज़ारी १३६००५८ रुपये—ज़मीन बहुत बराबर और आब व हवा मवाफ़िक़ है यहांकी ज़मीन—चाय,गेहूं औरतरह तरहकी जिन्सों के वास्ते बहुत अच्छी है जानवरों में गधे यहां बहुत हैं ज़िला के लोग खुश हैं और अक्सर रोज़गार पेशा लोग महाजनी का कार करते हैं एक पक्की सड़क फ़तेहपूर को गंगापार जाती है ठाकुरों की ख़ास आबादी है —तहसीलें इस ज़िला में—रायबरेली, सलोन और दिगबिजयगंज हैं ॥

सिवाय तहसीली मक़ामों के गुरबख़्शगंज, जगतपूर ताअंगनमऊ, मोहनगंज, बछरावां में एक एक थाना है अंगरेज़ी बहुत अच्छा मदर्सा ख़ास सदर में है ॥

सलोन और इन्होंने में उर्दू फ़ारसी पढ़ाई जाती है शिफ़ाख़ाना एक सदर में है ॥

उन्तीसवां पाठ।

ऐज़न् ॥

क़स्बे इस ज़िलाके शाहाबाद, संडीला, मल्लावां, बिलग्राम, सांडी, पिहानी, हरदोई, गोपामऊ, पाली हैं ॥

बहरायच से उतरकर शाहावाद सब से बड़ा क़स्बा अवध में है मकान पक्के दुमंज़िले सेमंज़िले हैं पढ़ने लिखने का चरचा यहां नहीं रहाहै—आंब यहां अच्छे होते और पेश्तर महमूदी कपड़ा यहां अच्छा होता था—आबादी अट्ठारह हज़ार ढाई सौ है ॥

संडीला पेश्तर एक बड़ा मक़ाम लिखने पढ़ने का था और बाज़ बड़े नामी लोग यहां होगये हैं—आबादी साढ़े पन्द्रह हज़ार है घी यहां का बाहर जाता है ॥

बिलगराम सब से मशहूर और नामवर क़स्बा अवध में है यहां बड़े२ आलिम फ़ाज़िल लईक़ आदमी होगये जिनकी बेशुमार उमदह२ क़िताबें यादगार हैं—इस क़स्बे का ज़िक्र अक्सर पुरानी क़िताबों में है सय्यद यहां के बड़े ख़ानदानी महमानों की ख़ातिर करतेहैं आबादी अब ग्यारह हज़ार सवा पांचसौ है पिहानी की तलवार नवाबों में बहुत मशहूर थी—गोपामऊ की आरसी सारे हिन्दुस्तान में जाती है यहां के अगले वक़्त की तारीख़ बड़ी बड़ी बातों से भरी है सिवाय इसके बावन एक बड़ा क़स्बा और माधोगंज, बेनीगंज, गौंगंज, शिरीमन नगर ख़रीद व फ़रोख़्त के ख़ास मक़ाम हैं—मझिया, बरावन, मफगांव की आबादी तीन तीन हज़ार से ज़ियादह है ॥

दूरदूर मशहूर है अवध के क़दीम बाशिन्दगान क़ौम भर का अख़ीर राजा यहां था—पसगवां, सिकन्दराबाद, अलीगंज और खैरीगढ़ यह मक़ाम मशहूर और नामवर हैं ॥

अट्ठाईसवां पाठ।

ज़िला हरदोई ॥

हरदोई लखनऊ से ८० मील है उत्तर इसके खीरी का ज़िला और शाहजहांपूर दक्षिण में उन्नाव पूरब में लखनऊ और सीतापूर पश्चिम में दरियाय गंगा—सई नदी यहीं से निकली है और ज़िला के तमाम लम्बाव भरमें गुज़रतीहै सुखेता—गर्रा और रामगंगा भी इस ज़िलामें है क्रर गंगा में गिरती हैं—ताल और झीलें बहुत हैं—रक़बा दो हज़ार तीन सौसचह मील मुरब्बा है—आब व हवा ख़ासकर हरदोई की अच्छी है माल गुज़ारी क़रीब सवा सोलह लाख के है तम्बाकू, गेहूं, कपास, तरकारी और सनई वग़ैरह सब जगह ज़ियादह पैदा होती है और जिसक़दर हल यहां चलता है उस क़दर और किसी ज़िलामें नहीं—क़सबे भी यहां बहुत हैं और मुसल्मान जो अवध में आये वह अक्सर इसी राह से आये—तहसीलें चार हैं उत्तर में शाहाबाद दक्षिण में संडीला—पूर्वमें ख़ास हरदोई—पश्चिममें बिलग्राम की तहसील है—तहसीली मक़ामों के सिवाय टंडियावं पिहानी, नकटौरा, मल्लावां, कछौना, बेनीगंज में एक एक अफ़सर पुलिस मुक़र्ररहैं और सिवाय बिलग्राम के और सब तहसीली मक़ामों में एकएक अस्पताल भी है हरदोई ख़ासमें अंगरेज़ी मदरसा है ॥

और नेपाली चीज़ें अक्सर इसी तरफ़ से आती हैं जंगल इस ज़िला में बहुत था अक्सर लोगों को बतौर गिरैनट यानी बख्शिश के मिला है और बहुतसा अबतक कटकर आबाद होगया है तहसीलें तीन हैं महमदी पश्चिम में है धौरहरा उत्तर और पूर्व में और लखीमपुर में दक्षिणका हिस्सा है ॥

सिवाय तहसीली मक़ामातके मसौली—गोला—ईसानगर भीरा सिंहाही में एक एक थाना है ॥

अंगरेज़ी का बहुत अच्छा मदरसा ख़ास लखीमपुर में है मक़ामात तहसीली में एक शिफ़ाख़ाना भी है ॥

सत्ताईसवां पाठ।

ऐज़न् ॥

इस ज़िला में सबसे बड़ा क़स्बा महमदी है इसमें ६ हज़ार साढ़े आठसौ के क़रीब आबादी है खीरी में इससे एक हज़ार कमकी आबादी है—चांवल, गुड़,राब, हलदी अदरक यहां से ख़ास कर बाहर जाता है—इनके बाद गोला, औरङ्गाबाद,धौरहरा, बोयल यह सब पुराने मशहूर क़स्बे हैं —गोला हिन्दुओं का बड़ा पूजाका मक़ाम है यहां के लोग बयान करते हैं कि यह मक़ाम रावण के वक़्त से आबाद है और वही यहां गोकर्ण नाथ महादेव को छोड़ गया था चैत में बड़ा भारी मेला कोई लाख आदमी से होता है—फागुन में एक और मेला होता है मगर उससे कम—औरंगाबाद में ग़दर के दिनों में बड़ा ख़ून हुआ धौरहरा में तुलसीदास के वक़्तका एक बड़ा बरगदका दरख़्त

हरगाम वग़ैरह बहुत मशहूर हैं—नीमसार मिसिरिख और हरगांव इनमें बहुत पुराने मक़ाम हिन्दुओं के पूजा के हैं मिसरिख का न्हान फागुन सुदी पूर्णमासी को और हरगांव में सूर्य्य कुण्ड का मेला कार्तिकी पूर्णमासी को पचास साठ हज़ार के जमाव से होता है ॥

बिसवें का तम्बाकू बहुत मशहूर है तामसन गंज ख़ास सदर में और केसरीगंज लहरपूर के पास ख़ास सौदागरी के मक़ाम हैं ॥

छब्बीसवां पाठ।

ज़िला खीरी ॥

लखीमपूर इस ज़िला का ख़ास मक़ाम लखनऊ से ८२ मील सीतापूर की राह से है उत्तर में इसके नैपाल का राज्य और शाह जहांपूर है दक्षिण में सीतापूर और हरदोई के ज़िला पूर्ब में घाघरा दरिया पश्चिम में शाहजहांपूर है इस ज़िला में कई बड़ी नदियां घाघरा—चौका—घाघी—ऊल—सराय—कुन्ती—गोमती यह सब नदियां यहां बहती हैं इन सब में घाघरा और घाघी बड़े डरावने दरिया हैं घाघी में नाग नाम एक जानवर इन्सान को समूचा निगलजाता है रक़बा कुल ज़िला का २६०१ मुरब्बा मील है उत्तर पूरब इस के जंगल तराई और दल दल है और शिकार के लिये अवध में ख़ास ज़िला है नैपाल की तराई का शिकार खैरी गढ़ के आगे होता है और हाथी वग़ैरह पकड़े जाते हैं माल गुज़ारी क़रीब छ:लाख अस्सी हज़ार के है चावल ख़ास कर यहां से बाहर जाता हैं

पच्चीसवां पाठ।

ऐज़न॥

बड़े बड़े क़सबे इस ज़िला के यहहैं—ख़ैराबाद—लहर पुर—महमूदा बाद—पीरनगर—सीतापुर—पैंतेपुर॥

ख़ैरा बाद बहुत बड़ा पुराना क़स्बा है साढ़ेपन्द्रह हज़ार से ज़ियादह इसकी आबादी है यहां बड़े बड़े विद्यावान और फ़क़ीर होगये हैं और शाही में बतौर शहर समझा जाता था— अब हर साल बड़े दिनके बाद सरकार की मदद से एक बड़ा मेला होता है और उसमें हाथी घोड़े और बहुत सी चीज़ें सौदागरी की दूर दूर से ज़ियादा आतीहैं—लहर पुर कुछ कुछ हिन्दुवानी क़स्बाहै राजा टोडर मल जो अकबर बादशाह के दीवान थे और जिनका हिसाब बहुत मशहूर है यहींके रहने वाले थे अक्सर पुराने२ मक़ाम यहां बहुतहैं--इमिली भी बहुत होतीहैं आबादी ग्यारह कम ग्यारह हज़ार है॥

महमूदा बाद दिन दिन रौनक़ पाता जाता है मुसल्मान यहां ज़ियादह हैं कुसुम यहां अच्छाहोता है राजा अमीर हसनख़ां साहब की तवज्जो और रिआया परवरी से मदर्सा सराय अस्पताल तहसील वग़ैरह सब यहां हैं॥

पेश्तर मनवां में रुई और नमक बहुत होता था साढ़े छः हज़ार के क़रीब आबादी है॥

ख़ास सीता पुरमें आब व हवा अच्छीहै और इसवास्ते फ़ौजकी छावनी का मक़ाम कियागयाहै—सिवाय इन क़स्बों के बाड़ी—बिसवां—मछरेहटा—मिसरिख—नीमषार—तम्बौर

चौबीसवां पाठ।

ज़िला सीतापूर॥

सीतापूर सदर लखनऊ से ५२ मील है उत्तर में खीरी का ज़िला दक्षिणमें बारह बंकी और लखनऊ पूर्बमें दरियाय घाघरा और पश्चिम में दरियाय गोमती और आगे ज़िला हरदोई है॥

नदियां इस ज़िला में कई हैं घाघरा की बड़ी शाख़ चौका कटवानी नदी—सरायन—कुंती यह सब यहां बहतीहैं॥

झीलों में ताल गांव की झील है—रक़बा इस ज़िला का २२०६ मुरब्बा मील है मालगुज़ारी १२८७०९५ के क़रीबहै इस ज़िला की ज़मीन किसीक़दर नीचीहै और अक्सर दरियाओं का पानी चढ़ आताहै—गाय बैल इस ज़िला में बहुत हैं और तम्बाकू और चावल दो मशहूर पैदावारहैं—लखनऊ से पक्की सड़क और घोड़ों की डाक और सौदगरों की किरांचियां चलतीहैं—कुल ज़िला चार तहसीलों में बंटाहुआहै॥

बीचमें तहसील सीतापूर पश्चिम में मिसरिख दक्षिण में महमूदा बाद और पूर्ब में बिसवां॥

सिवाय तहसीलों के ख़ैराबाद—लहरपूर—महोलीऔर बाड़ी में एक एक थाना है॥

अंगरेज़ी बहुत बड़ा मदर्सा ख़ास सदर मेंहै और उसके सिवाय महमूदा बाद—ख़ैराबाद में भी अंगरेज़ी पढ़ाई जाती है शिफ़ाख़ाना एक सदर मेंहै और एक महमूदा बादमें है॥

———

इसकी आबादी है इसे रंजीत पुरवा भी कहतेहैं शक्कर का व्योपार ख़ासकर होता है ॥

मोरावां बहुत क़दीम हिन्दवानी क़स्बा है आबादी क़रीब ८ हज़ार के है नमक और शोरा यहां ख़ासकर बनता है यहांके खत्री बड़े महाजन हुये हैं बस्तीमें संस्कृत का चर्चा बहुत रहा है ॥

बांगरमऊ कलियानी नदी पर वाक़े है आबादी इसकी साढ़े सात हज़ार से कुछ ज़ियादहहै फ़ारसी का चर्चा यहां सब लोगें में भी रहा है ॥

सफ़ीपुर की आबादी ७३०० के क़रीब है इसमें अच्छे२ फ़क़ीर और कामिल लोग होगये हैं और उनकी क़बरें वग़ैरह अब भी मौजूद हैं सालमें एक उर्स ग़ोस आज़मका बड़े धूम से होता है उन्नाव की आबादी सात हज़ार पौने तीनसौ के क़रीब है उन्नाये कायथ बकसरत हैं पेश्तर इल्म व हुनर बहुत सीखते थे पेड़े यहांके मशहूर हैं ॥

सिवाय इनके ऊगू—पड़रीकलां—हड़हा—भलोतर—अचलगंज—बेथर—बीकापुर—मुहान—नेउतिनी—बिहार यह भी बड़े बड़े क़स्बे हैं—इस में मोहान के हकीम बहुत मशहूर हैं—और बिहार के ब्राह्मण ॥

गंजों में मुरादाबाद—अचलगंज—नवाबगंज—नवलगंज भगवन्तनगर— बीघापुर—ऊगू बड़े गंज हैं और अनाज वग़ैरह बहुत बिकता है ॥

भगवन्तनगर और नवलगंज में फूल और पीतल के बर्तन बहुत बनते हैं ॥

मील है और मालगुज़ारी १३ लाख ५१ हज़ार ६६३ यह ज़िला बहुत पैदावार है और दरिया के पास होने से सौदागरी भी यहां अच्छी चलती है आबादी ज़ियादह करके हिन्दुओं की है और अक्सर ऊंचे ऊंचे क़न्नौजिये ब्राह्मण हैं रायबरेली के बाद सबसे कम मुसल्मान इसी ज़िला में हैं लखनऊ की रेलवे दो स्टेशन इस ज़िला में हैं एक ख़ास उन्नाव में लखनऊ से जाते तीसरा और एक अजगैन में दूसरा मक़ाम है एक पक्की सड़क भी इस में होकर कानपूर जाती है ॥

तहसीलें इसमें चार हैं ख़ास तहसील उन्नाव ज़िलाका पश्चिम हिस्सा है तहसील पुरवा में पूर्व और दक्षिण के परगने हैं ॥

सफ़ीपुर की तहसील से उत्तर का हिस्सा मुतअल्लिक़ है और तहसील मोहान में पूर्व उत्तर का हिस्सा है ॥

तहसीली मक़ामों के अलावा अचलगंज-अजगैन-बांगरमऊ—मौरावां-नवलगंज-बिहार में एक एक थाना मुक़र्रर है ॥

अंगरेज़ी बड़ा मदर्सा ख़ास उन्नाव में है ॥

तेईसवां पाठ।

ऐज़न॥

इस ज़िलाके ख़ास बड़ेबड़े क़स्बे यहहैं पुरवा—मौरावां बांगरमऊ—सफ़ीपुर—उन्नाव—तारगांव—असीवन-हड़हा-कुरसट—बेथर—मवई ॥

पुरवा सबसे बड़ा क़स्बा है दशहज़ार आठसौ अस्सी

दरियाबाद कायस्थों का क़सबा है आबादी ६ हज़ार के क़रीब है यहां के अवस्थी होते हैं ॥

रामनगर पुराना राज्य है यहांके राजा बादशाही में बहुत मशहूर और ईमान दार थे इसके क़रीब लोधेश्वर महादेव हैं यहां पर हिन्दुओं का बड़ा भारी मेला होताहै—अफ़ियून और तमाकू बहुत होता है—सिवाय इन पंज हज़ारी क़सबों के सतरिख—सिद्धौर—कंतूर—महमदपूर—बेलहरा हैदर गढ़—भटवा मऊ—रसौली—मसौली—सिहाली—कुरसी बदोसराय हैं क़सबों के मवाफ़िक़ सफ़ेद पोश आबाद हैं सतरिख में सैयद सालार का बड़ा मेला होता है सिद्धौर में फ़क़ीर बहुत हुयेहैं—कंतूर में रियाज़ी का चरचा रहा है—सिहाली में पेश्तर भी पढ़ने और पढ़ाने का बहुत चरचा था और लखनऊ के फ़िरंगी महल के लोग यहीं के रहनेवाले हैं बहराम घाट पर ग़ल्ले और लट्ठों की बड़ी सौदागरी होती है—अलिआबाद में पेश्तर बड़े बड़े बिलायती सौदागरों की कोठियां थीं ॥

बाईसवां पाठ ।

ज़िला उन्नाव ॥

उन्नावके उत्तर लखनऊ और हरदोई दक्षिण में गंगाजी पूर्ब में ज़िला लखनऊ रायबरेली और पश्चिम में गंगाजी हैं—इसमें अक्सर पुराने मक़ाम हैं कि जिनमें पहले पहल क़न्नौजिये ब्राह्मण गंगाजी के किनारे आ बसे थे सैलियानी नदी इस ज़िलेमें है बसहा की झील बहुत बड़ी और गहरी है कुल रक़बा इसका सत्तरह सौ इक्कीस मुरब्बा

गढ़ दक्षिण हिस्सा है सिवाय तहसीली मक़ामों के कुरसी रामनगर,सिद्धौर,भेलसर, टिकयत नगर में एक एक थाना है बड़ा अंगरेज़ी मदर्सा ख़ास नवाबगंज में है॥

इक्कीसवां पाठ।

ऐचान्॥

इस ज़िला के क़स्बों में नवाबगंज, रुदौली, ज़ैदपुर फ़तेपुर और रामनगर है॥

अंगरेज़ी अमल दारी के बादसे नवाबगंज की बहुत तरक़्क़ी हुई अब यह तमाम अवधमें बहुत बड़ा गंज है और लखनऊ के क़रीब होनेसे इसमें बड़ी रौनक़ और आबादी है—यह पुराने क़स्बों में नहीं शुमार हो सक्ता बनिये महाजन दूकानदार इसमें ख़ास कर हैं शक्कर राब वग़ैरह का ब्योपार इस गंज में बहुत है—आबादी इसकी साढ़े चौदह हज़ार है लखनऊ से१० मील का फ़ासिला है॥

रुदौली बड़ा पुराना क़स्बा है बस्ती में कई ताल्लुक़े दार हैं—सय्यदसालार की बीबी ज़ोहरह बीबी का यहां रोज़ा है आबादी साढ़े बारह हज़ार के क़रीब है॥

ज़ैदपुर के सय्यद लोग बड़े नेकनियत और सख़ी मशहूर हैं फ़तेहपुर में हिन्दू मुसल्मान दोनों अच्छे २ होगये हैं पुरानी इमारतें भी अक्सर हैं कई उर्स बड़े भारी होते हैं—सूती क़ालीन यहां के बहुत मशहूरहैं आबादी साढ़े सात हज़ार है॥

आबादी काकोरी से अंदाज़न एक हज़ार कम है और ख़ास कर पठान लोग यहां रहते हैं मेवे यहां के ख़ासकर मशहूर हैं ज़बरक का काम ख़ासकर यहां बनता है—अमेठी की आबादी क़रीब सात हज़ारके है—मुसल्मानों के यहां शुरू शुरू में बड़े २ फ़क़ीर और वली होगये हैं बंदगीमियां और आलमगीर के उस्ताद मुल्लाजियन यह सब यहीं के रहने वालेथे—सिवा इनके बिजनौर,नगराम,महोना और कस मंडीकी भी गिन्ती क़स्बोंमें है—गंजों में गोसाईंगंज मोहन लालगंज,मिरज़ागंज,अमानीगंज हैं॥

बीसवां पाठ—

ज़िला बारहबंकी॥

ज़िला बारहबंकी के उत्तर हद्दपर दरियाय घाघरा और पार ज़िला गोंडाहै—दक्खिनमें सुल्तांपुर व रायबरेली—पूर्व में फ़ैज़ाबाद व पश्चिम में लखनऊ व सीतापुरहै गोमती नदी इस ज़िला में भी है सिवाय इसके कलियानी बड़ी नदीहै रेट जमुरिया राढ़ी भी छोटी छोटी नदियां हैं सबसे बड़ी झील मढ़हा इसी ज़िलासे शुरू होतीहै इसके सिवाय जहांगीराबाद की झील भी बड़ी है रक़बा इस ज़िला का १७४४० मुरब्बा मील है और मालगुज़ारी १५१०३७१ है इस ज़िला की ज़मीन बहुत अच्छी है और सब ज़िलों में यह ज़िला मालदार और आबादहै॥

तहसीलें इस ज़िला में चार हैं—तहसील नवाबगंज ज़िलाका पश्चिम हिस्सा है राम सनेही घाट पूर्व हिस्सा है तहसील फ़तेपुर उत्तर हिस्सा है और तहसील हैदर

से बड़ा मदर्सा केनिंगकालिज है इस में अंगरेज़ी अरबी संस्कृत फ़ारसी वग़ैरा सब ज़बाने पढ़ाई जाती हैं सब ज़िलों के लड़के यहां मौजूद हैं आबादी कुल शहरकी २८४६७० है॥

अठारहवां पाठ।

ज़िला लखनऊ॥

ज़िला लखनऊ के उत्तर तरफ़ ज़िला सीतापुर और बारहबंकी व दक्षिण तरफ़ रायबरेली और उन्नाव—पूर्बमें बारहबंकी—और पश्चिम में उन्नाव हरदोई है—बड़ी नदी इस के बीचोबीच में गोमती है सिवाय इसके सई और बेता दो बड़ी नदियां हैं—कुल रक़बा इसका ६८८ मुरब्बा मीलहै मालगुज़ारी इस ज़िला की ८४३०६६ है बनिस्बत और ज़िलों के शहर और क़स्बात की वजह से मुसल्मान यहां ज़ियादह हैं चारों तरफ़ ज़िला के चार पक्की सड़कें हैं और तहसील तहसील और थाने २ कच्ची सड़कें हैं॥

तहसीलें इसमें तीनहैं तहसील लखनऊ बीचमेंहै—और उत्तर पश्चिम इसके तहसील मलिहाबाद—और पूरब दक्षिण तहसील मोहन लालगंज है तहसीली मक़ामों के सिवाय एक एक थाना—बनथरा,इटौंजा और गोशाईं गंज में है॥

उन्नीसवां पाठ।

ऐज़न्॥

ख़ास क़स्बात इस ज़िला के काकोरी,मलिहाबाद और अमेठी है काकोरी की आबादी सवा आठ हज़ारके क़रीब है और इसमें अच्छी अच्छी उमदा कोठियां और बड़े २ इज़्ज़तदार और क़ाबिलियाक़त वाले लोग हैं—मलिहाबाद की

पुल लोहे का है जिस की तामीर मुहम्मद अली शाह बादशाह के वक़्में ख़तम हुई दूसरा पक्का पुल कहलाता है यह उस मक़ाम पर वाक़े है कि जहां पहिले लखनऊ आबाद था सरकारी अमलदारी में एक पक्का पुल और एक काठ का पुल ज़ियादह हुआ है ॥

देखने के लायक़ इमारतें यहां की यह हैं आसफ़ुद्दौला का इमामबाड़ा जिसके गिर्द से धुस बंधा है—जिसमें हुसेनाबाद के मकानात और कोठी मारटीन साहब—जामयमसजिद—छतरमंज़िल—क़ैसरबाग़—शाहनजफ़ वग़ैरह ॥

सत्रहवां पाठ ।

ऐज़न॥

आज कल की सूरत के मुवाफ़िक़ एक पुराना लखनऊ और एक नया लखनऊ समझना चाहिये पुराना चौक के गिर्द है और नये लखनऊ में तमाम बारीकें और हाकिमों के रहने के मकानात अच्छी २ कोठियां और चौड़ी सड़कें हैं कुल तक़सीम लखनऊ की सात थानों में है—चौक सआदतगंज, नगरिया, वज़ीरगंज सब पुराने लखनऊ में हैं थाना हसनगंज गोमती के पार है—गनेशगंज और कोतवाली सदर नये लखनऊ से मुतअल्लिक़ हैं—पुराना बाज़ार यहां का चौक है इसके बाद हुसेनाबाद का बाज़ार जिसे जमुनिया बाग़ कहते हैं बना है—इस वक़्त में अमीनाबाद की बाज़ार में बड़ी रौनक़ होती है अनाज की मंडी के ख़ास मक़ाम यह हैं सआदतगंज, किशोरगंज, फ़तेगंज मुसाहबगंज, चांदगंज, रकाबगंज तमाम मुल्क अवधका सब

पन्द्रहवां पाठ।

इन्तिज़ाम अमलदारी॥

अमल्दारी इस सूबे की इस तरह पर है कि सबसे ऊपर जनाब नव्वाब लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर बहादुर पश्चिमीय उत्तरीय देशोंके सूबे अवध के साहब चीफ़ कमिश्नर बहादुर हैं तमाम ऊंचे महकमों के हाकिम सब मुशकिल बातों में उन की ख़िदमत में अर्ज़ करते हैं और वह या तो आप हुक्म देदेते हैं या अगर लाट साहब की मंज़ूरी की बात हुई तो उन के पास मय अपनी राय के भेज देतेहैं सीग़े अदालत के सबसे बड़े हाकिम जुडीशल कमिश्नर बहादुर हैं इसी तरह और महकमों के भी एक एक बड़े हाकिम हैं और हर चहार क़िस्मत यानी कमिश्नरी में एक एक साहब कमिश्नर और एक एक साहब जज और हर एक ज़िलामें एक एक साहब डिपुटी कमिश्नर और एक एक सब जज मुकर्रर हैं॥

सोलहवां पाठ।

शहर लखनऊ॥

लखनऊ बड़ा पुराना शहर है मगर साबिक़में ऐसी रौनक़ और आबादी न थी नवाब आसफ़ुद्दौला के वक़्त से यह कुल हाकिम यहीं रहने लगे और उनके बाद जो जो नव्वाब और बादशाह हुआ उसने कुछ न कुछ मकानात और बनवाये और शहर की रौनक़ ज़ियादह बढ़ाई—दरियाय गोमती के दोनों तरफ़ आबादहै मगर ख़ास हिस्सा दाहिने तरफ़ है पुलों की राहसे आमद रफ़्त होतीहै सबसे उमदा

तरफ़ मिलती है यहां बहुत सी नदियां पहाड़ों से निकल-कर और जंगलों में होकर घास और पतावर के मैदानों में ज़ाहिर होती हैं— यह ज़मीन अक्सर तर रहती है और जो कि यहां घास और पत्ते पानी में बइफ़रात सड़ा करते हैं इस वास्ते आब व हवा यहां की ख़ासकर ख़राब और नुक़सान करती है और अक्सर ग़ैर आदमी को यहां का पानी लगता है गरमी में यहां शेर बहुत होते हैं आबादी यहां थोड़ी बहुत यहीं के लोगों की है ॥

चौदहवां पाठ।

आबादी ॥

कुल आबादी अवधकी एक किरोड़ पन्द्रहलाख पांचहज़ार है—इस में एक किरोड़ बारह लाख दो हज़ार तीस बाहर ज़िलों की आबादी है और दो लाख चौरासी हज़ार सात सौ सत्तर ख़ास शहर लखनऊ की है ईसाई मज़हब के आदमी ६४३० हैं—मुसलमान ११६५८७० —हिन्दू एक किरोड़ दो हज़ार सात सौ तीस—ब्राह्मण यहां सब जातों से ज़ियादह कोई चौदह लाखहैं—छत्री उनके आधेहैं—शूद्र वर्णमें अहीर सब से ज़ियादह कोई १२ लाख हैं लोग यहां के अक्सर ख़ूब सूरत और अच्छे वज़ा के होते हैं—बैसवाड़े के लोग निहायत लम्बे चौड़े तन्दुरुस्त होते हैं और अक्सर फ़ौज में रहा किये हैं अकसर यहां के लोग सच्चे नेक सीधे नमक हलाल शऊरदार और नक़ल उतारने में कामिल हैं मगर इसके साथ मज़लूम सीरत भोंड़िया धसान लालची रुपये के मुरीद होते हैं ॥

तालाब हैं लेकिन कहीं कोई बड़ी भारी झील नहीं है इधर उधर छोटे टुकड़े पानी के हैं उन्हीं को झील व तालाब वग़ैरह बोलते हैं गोमती और गंगा के दरमियान झीलें ज़ियादह करके हैं और बारहबंकी फ़ैज़ाबाद में मढ़ा झील उन्नाव में बसहा-रायबरेली में हलोर और ज़िले सुल्तांपुरमें कछवा ताल—और लखीमपूर में वेलकी झील यहां की बड़ी झीलों में जानना चाहिये ॥

बारहवां पाठ।

जङ्गल॥

अवध के उत्तर और पश्चिम तमाम जंगल है इस बड़े क़ता जंगल के तीन हिस्से हैं पाहिला हिस्सा खेरीगढ़-सीहेली और मोहाना नदियों के बीच मेंहै कुल रक़बा इसका २६३ मुरब्बा मील है साखू यहां ख़ास कर पैदा होता है दूसरा हिस्सा बहरायच का कौड़ियाला और गरवा नदियों के बीच में है यहां शीशम बहुत पैदा होता है—इसका रक़बा २६६ मुरब्बा मील है तीसरा हिस्सा जंगल का गोंडा है यहां के दरख़्त अकसर छोटे रहजाते हैं और उनकी बल्लियां बनती हैं यह जंगल १०० मुरब्बा मीलहै और साखू की इस में कसरत है॥

तेरहवां पाठ।

तराई॥

इस सूबेके उत्तर की तराई बहुत मशहूर है यह वह ज़मीन है कि जो पहाड़ों के बाद जंगलों से नीचे की

हैं— उल नदी खीरी की तराई में से निकलती है और लखीमपुर के नीचे २ होकर चोका नदी में आमिलती है॥

दशवां पाठ।

ऐज़न॥

घाघरा और गंगा के दरमियान गोमती नदी उत्तर की एक तराई में से निकलती है और लखनऊ के बीच होकर ४८० मील के बहाव पर बनारस से १६ मील दक्षिण पर दरियाय गंगा में गिरतीहै—इसका पानी बहुत मीठा होता है और इसके किनारे बहुत अच्छी खेती और बड़ी कैफ़ियत रहतीहै—कटना नदी भी शाहजहांपुर में कहींसे निकल कर सीतापुर और हरदोई की राह में गोमती में आ मिलती है दोनों किनारों पर उसके बराबर जंगल है इसलिये इसका पानी बहुत बुरा होता है॥

सई नदी भी हरदोई के झाबरसे निकलती है बाज़ जगह पर इसमें बहुत कम पानी होता है खेती में इस से बड़ी मदद मिलती है पानी इसका पीने में अच्छा और हाज़िम होता है लखनऊ के दक्षिण२ पूरब बहकर जौनपुर के आगे गोमती में मिली है इसके सिवाय बेता और लोनी ज़िले हरदोई के झाबरों से निकल कर गोमती की मददगार होती हैं॥

ग्यारहवां पाठ।

झील व तालाब॥

अवध में सो बीघे पीछे क़रीब साढ़े छ:बीघे झील और

सी नदियां हैं घाघरा से उत्तर दरियाय राबती और बबाई दोनों हिमालय पहाड़ से निकल कर इसमें आमिलती हैं दरियाय राबती नेपाल के पहाड़ों से निकलता है और वहां की सर ज़मीन में पश्चिम उत्तर जाकर फिर दक्षिण तरफ़ झुक कर अवध के उत्तरीय हिस्से गोंडे में बहताहै इस का लम्बाव दोसौ सत्तर मील है—गोरख पूरके पास दरियाय घाघरा में मिलता है—इसके उत्तर में एक दरिया बूढ़ा राबती मिलता है इसमें कोई बीस पच्चीस छोटी नदियां नेपाल के पहाड़ों से निकल कर आगिरती हैं—बबाई नदी शुरू में बहुत गहरी है इसका पानी कुछ सरयूमें गिरता है कुछ घाघरा में—मोहाना नदी भी नेपाल और अंगरेज़ी अमल दारी के बीच में बहकर गोरी घाटके क़रीब कोड़ि-याला में गिरती है॥

नवां पाठ।

ऐज़न्॥

दरियाय सुहेली—सारदा—ऊल यह सब नदियां घाघरा में दक्षिण तरफ़से आमिलती हैं इन में ऊल तो पहाड़ी दरिया नहीं है बाक़ी सब हिमालय के पहाड़ों से निकल-तेहैं सारदा सबसे बड़ा दरिया है—यह हिमालय पहाड़से बरम देव मक़ाम के क़रीब काली नदी के नाम से निकल-ताहै—और कमाऊं वा नेपाल के बीचमें होकर पूरब दक्षिण बहताहै—और कटी घाटके पास कोड़ियाला में गिरता है दरियाय सारदा अपने निकलने की जगह पर गंगाजी के बराबर होता है—सुहेली और चौका नदी इसमें आ मिलती

सिवाय अक्सर जगहों पर ऊंचेऊंचे डीह टीलोंके मुवाफ़िक़ हैं यह डीह पुराने क़स्बों और गावोंके वीरानों से होगयेहैं॥

सातवां पाठ।

दरिया॥

नदियोंकी अवध में बहुत कसरत है—गंगाजी उत्तरीय हिन्दुस्तान के तीन बड़े दरियावोंमें से हैं अवधके दक्षिणीय पश्चिमीय ज़िलों परतापगढ़, रायबरेली, उन्नाव हरदोई को बहुत अच्छी तरह तर व ताज़ा करती हैं निकलने का मक़ाम इनका हिमालय में गंगोत्तरी पर्बत है इनका तूल १५५७ मील है—दूसरा बड़ा भारी दरिया सूबा के अन्दर घाघरा है निकलने की जगह कौड़ियाला और सरयूभी कहतेहैं—सिल सिला हिमालय में कमाऊं के पहाड़ पर बड़े ऊंचेसे निकलता है—और उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व होकर अवध को दो हिस्सोंमें तक़सीम करता है इसका तूल ६०० छः सौ मील है और इतनाही दूर बहकर यह दरिया अपने और दरियाओं से मिलकर सूबा बिहार में शहर छपरा के पास गंगाजी में मिलता है—और इसके बराबर और कोई दरिया गंगाजी में नहीं मिलता है—बरसात के दिनों में इस दरिया का पाट बहुत बड़ा चौड़ा हो जाता है—धुवें के जहाज़ इसमें बहराम घाटतक आसक्ते हैं॥

आठवां पाठ।

ऐज़न॥

गंगा और घाघरा दो दरियाओं के सिवाय और बहुत

रसूलाबाद—अंगरेज़ी बन्दोबस्त के मुवाफ़िक़ यहां चार क़िस्मतें हैं और हर क़िस्मत में तीन तीन ज़िले फिर हर ज़िले में तीन तीन चार चार तहसीलें और सात सात आठ आठ थाने हैं ॥

पांचवां पाठ ।

अवध के अंगरेजी हिस्से ॥

चार क़िस्मतों यानी कमिश्नरियों के नाम—लखनऊ ख़ैराबाद, बैसवाड़ा, फ़ैज़ाबाद हैं लखनऊ के तीन ज़िले लखनऊ बारहबंकी उन्नाव हैं—ख़ैराबाद के तीन ज़िले सीतापूर खीरी हरदोई हैं—बैसवाड़े के तीन ज़िले रायबरेली परतापगढ़ और सुल्तांपूर हैं—फ़ैज़ाबाद के तीन ज़िले फ़ैज़ाबाद गोंडा और बहरायच—क़िस्मत लखनऊ दक्षिणी हिस्सा अवधका है—फ़ैज़ाबाद उत्तर हिस्सा—बैसवाड़ा पूर्व हिस्सा—ख़ैराबाद पश्चिम हिस्सा है ॥

छठां पाठ ।

टीले और पहाड़ ॥

अवध की ज़मीन सब बराबर यकसां दक्षिण रुख झुकी हुई है—पहाड़ और टीले इसमें नहीं हैं गोंडे के उत्तर कई कोससे ऊंचे ऊंचे पहाड़ दिखाई देते हैं—दुनियांमें सबसे ऊंचा पहाड़ जो हिमालय है वह इन्ही ऊंचे ऊंचे पहाड़ों और घाटियों से शुरू होताहै, ज़मीन में यहां पानी बहुत कम निकलता है और खेती बारी नहीं होती ऊंची ऊंची घास किलक और नरकुल खुद बखुद पैदा होते हैं इसके

इसी सूबे में पैदा हुये थे—उनके वक़्में इसे अयोध्या का राज्य कहते थे मुसल्मानोंके वक़्मेंभी यहां एक ख़ास सूबेदार रहताथा—और अख़ीर २ में एक ख़ास अमल्दारी और बादशाहत यहां मुक़र्रर होगई थी—सन् १८५६ ई० में यह सूबा शामिल अमल्दारी सरकार अंगरेज़ी हुआ उस वक़् से सन् १८६६ ई० तक हकूमत उस की अलग रक्खी गई सन् १८७७ ई० में यह सूबा भी शामिल अमल्दारी पश्चिमीय और उत्तरीय देशों के किया गया ॥

तीसरा पाठ ।

सूरतऔर रक़बा॥

देखने में सूरत इस मुल्क की कुछ कुछ पचकोन सी है—यानी तीन कोने पूरब तरफ़ हैं और दो पश्चिम तरफ़ लम्बाव इसका कोई दो सौ सत्तर मील यानी एकसौ पैंतीस कोस है और चौड़ाई एकसौ साठ मील यानी अस्सी कोस है—कुल ज़मीन इस की यानी रक़बा २१६६२ मुरब्बा मील है यानी अगर हम हिंदुस्तान के निस्बत कहें तो यह सूबा उसका बावनवां टुकड़ा है—कुल आमदनी इस मुल्कको डेढ़ किरोड़ रुपये है ॥

चौथा पाठ ।

अवधके नवाबी हिस्से ॥

बादशाही में यहां बारह चकलेदारियां थीं जिनके नाम यहहैं—लखनऊ, सुल्तांपुर, अल्देमाल, परतापगढ़, बैसवाड़ा सलोन, अहलादगंज, गोंडा, बहरायच, ख़ैराबाद, सांडा

जुग़राफ़िया अवध ॥

पहिला पाठ ।

अवध की हद्दें ॥

सूबा अवध हिंदुस्तान में उत्तर तरफ़ है—अवधके उत्तर नैपाल का राज्य है और दक्षिणमें गंगा नदी अवध और पश्चिमीय उत्तरीय देशों के बीच में है—जिसके इस तरफ़ अवध के ज़िले हैं और उस तरफ़ कानपूर फ़तेहपूर इलाहाबाद पश्चिमीय उत्तरीय देशों के ज़िले हैं—पूर्व्वमें बस्ती व गोरखपूर—और घाघरा नदी से गंगा तक आज़मगढ़ और जौनपूर के ज़िले हैं—और पश्चिममें रुहेलखण्ड का सूबा जिस में क़न्नौज शाह जहांपूर बांसबरेली वग़ैरह हैं ॥

दूसरापाठ ।

अवध की बड़ाई ॥

उत्तरीय हिंदुस्तानके सूबों में यह सूबा बहुत पुराना और पैदावार है हिंदुओं के वक़्त में भी यह सूबा बड़ा नामवर और मशहूर रहा है राजा रामचन्द्रजी जिन्होंने लंका पर चढ़ाई की और वहां के बड़े ज़ोरावर राजा रावण को मारा और जिनका सारा हिंदुस्तान मानने वाला और मुरीद है वह

पाठ	मज़मून	सफ़ा
२१	ऐज़न्, ...	१३
२२	ज़िला उन्नाव, ...	१४
२३	ऐज़न्, ...	१५
२४	ज़िला सीतापूर	१७
२५	ऐज़न्	१८
२६	ज़िला खीरी, ...	१९
२७	ऐज़न्, ...	२०
२८	ज़िला हरदोई, ...	२१
२९	ऐज़न्, ...	२२
३०	ज़िला रायबरेली	२३
३१	ऐज़न्, ...	२४
३२	ज़िला सुल्तांपुर, ...	२४
३३	ऐज़न्, ...	२५
३४	ज़िला प्रतापगढ़, ...	२६
३५	ऐज़न्	२७
३६	ज़िला फ़ैज़ाबाद, ...	२७
३७	ऐज़न्, ...	२९
३८	ऐज़न्, ...	३०
३९	ज़िला गोंडा, ...	३१
४०	क़सबे, ...	३२
४१	ज़िला बहरायच, ...	३४
४२	ऐज़न्, ...	३५

इति ॥

जुग़राफ़िया अवध का

सूचीपत्र ॥

पाठ	मज़मून	सफ़ा
१	अवध की हद्दें, ...	१
२	अवध की बड़ाई, ...	१
३	सूरत और रक़बा, ...	२
४	अवधके नवाबी हिस्से, ...	२
५	अवधके अंग्रेज़ी हिस्से, ...	३
६	टीले और पहाड़, ...	३
७	दरिया, ...	४
८	ऐज़न्, ...	४
९	ऐज़न्, ...	५
१०	ऐज़न्, ...	६
११	झील व तालाब, ...	६
१२	जङ्गल, ...	७
१३	तराई, ...	७
१४	आबादी, ...	८
१५	इन्तिज़ाम अमल्दारी, ...	९
१६	शहर लखनऊ, ...	९
१७	ऐज़न्, ...	१०
१८	ज़िला लखनऊ, ...	११
१९	ऐज़न्, ...	११
२०	ज़िला बारहबंकी, ...	१२

Jugrafee

जुग़राफ़ियह अवध

जिसमें

अवध के ज़िलों का कुल जुग़राफ़ियह यानी
ज़मीन व मुक़ामात वग़ैरह के हालात तहक़ीक़ात
जदीद के बमूजिब
निहायत आसान ज़बान में विद्यार्थियों
के फ़ायदे के लिये शामिल हैं

श्री युत जान सी नेस्फ़ील्ड साहब बहादुर
एम, ए, इन्स्पेक्टर मदारिस अवध की
आज्ञानुसार

मुंशी दुर्गा प्रसाद साहब असिस्टण्ट इन्स्पेक्टर मदारिस
सूबह अवध ने पण्डित शिव नारायण साहब स्वर्ग
बासी साबिक़ डिपुटी इन्स्पेक्टर मदारिस लखनऊ के
जुग़राफ़ियह अवध से इन्तिख़ाब किया

वास्ते इस्तेमाल मदारिस अवध के

दूसरीबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा
जून सन् १८८१ ई०॥

Jugrāfiyah-ĕ-Awadh.

13. B. 28 Hindi Sion 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.